Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X, Impact Factor: 7.866, Volume 15, No. 02, April-June 2025, pp. 205-207

हिन्दी साहित्य में कहानी विधा का विकास

प्रेम लता*

सार

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह अपने जीवन में सामाजिक जीवन के विभिन्न पक्षों को अनुभूत करता है। वह इन अनुभवों के माध्यम से समाज को समझता है तथा उनके अनुसार स्वयं को व्यवस्थित करता चला जाता है। यह भी एक सच है कि सामाजिक जीवन के सभी पक्षों को व्यक्ति अपने जीवन काल में प्रत्यक्ष नहीं कर सकता। व्यक्ति का दायरा अपने आवास के आस–पास तक ही सिमटा रहता है। सूचना प्रौद्योगिकी से पूर्व तक यह कथन और भी अधिक सार्थक था। व्यक्ति अधिकाधिक जानकारियां व अनुभव लेना चाहता है। इस हेतु सूचना प्रौद्योगिकी से पूर्व काल तक वह केवल साहित्य पर निर्भर था। आज भी साहित्य हमारे जीवन का महत्वपूर्व हिस्सा है। साहित्य संभवतः मनुष्य की अपनी भावी पीढ़ियों के लिए छोड़ी गई अनुभवों की गट्ठरी है, जो उनकी संतानों का मार्ग दर्शन करती है। साहित्य की अनेक विधाएं है। इन विधाओं में एक महत्त्वपूर्ण विधा कहानी है जो युगों युगों से भावी पीढ़ियों के शिक्षण का प्रमुख आधार रही है। कोई भी समाज ऐसा नहीं है जिसमें कहानियां नहीं पाई जाती है। संपूर्ण साहित्य ही मनुष्य को प्रभावित करने की क्षमता रखता है, इसमें भी कहानी कला वह विधा है, जिसे मनुष्य को आरंभिक काल से ही प्रभावित किया है।

शब्दकोशः *हिन्दी साहित्य, समाज, सूचना प्रौद्योगिकी, आरंभिक काल, शिक्षण, कहानी विधा।*

प्रस्तावना

हिंदी गद्य विधाओं में 'सबसे सशक्त विद्या बनकर विकसित हुई है। आज कहानी के पाठक अन्य सभी विधाओं की तुलना में सर्वाधिक है। यही कारण है कि पत्र पत्रिकाओं में कहानियों की मांग सर्वाधिक है। यही नहीं अपितु कई पत्रिकाएं तो केवल कहानी पत्रिकाएं ही है, जो समकालीन कथाकारों की स्तरीय कहानियों के साथ–साथ उभरते हुए कहानीकारों की कहानी भी छपती है। विगत 100 वर्षों में हिंदी कहानी ने जो आशातीत प्रगति की है, वह उत्साहवर्धक है। अन्य सभी गद्य विधाओं की अपेक्षा आज की हिंदी कहानी में युगबोध की क्षमता सबसे अधिक दिखाई पड़ती कहानी कर्म का विश्लेषण साहित्य समीक्षा में दीर्घकाल तक उपेक्षित रहा, इसके अनेक कारण में से एक कारण सहज प्राप्त परंपरा रूप में कविता की समृद्ध समीक्षा और प्रतिष्ठित समीक्षको का गद्य रूप में छोटी कहानी के लिए विगईणा का भाव रहा।

* सहायक आचार्य, भारतीय पी जी महिला महाविद्यालय, सीकर, राजस्थान।

कहानी शायद मानव जीवन के साथ चली आ रही है। वह मौखिक रूप से भी रही है और आगे चलकर लिखित रूप में भी उसका संबंध आनंद से भी रहा है और ज्ञान से भी। इसलिए कहानी यूं तो अनादि काल से हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा है, लेकिन जहां तक हिंदी कविता के आरंभ का प्रश्न है, वह अपने में अलग मत रखता है। प्रायः लोगों ने संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश साहित्य की कथा आख्यायिकाओं से ऋग्वेद की छोटी–छोटी कथाओं, कथा भंडार महाकाव्य और पुराणों तथा बौद्धों की जातक कथाओं और गुणाढय की 'वृहत्कथा' की कथाओं से जोड़ा है और फिर मध्यकाल में फारसी साहित्य से संपर्क बढ़ाने के कारण 'सीरी फरियाद' और 'लैला मजनू' जैसी प्रेम कथाओं में उसकी परंपरा ढूंढते हुए आधुनिक काल तक के उसके विकास को सिद्ध किया है लेकिन वह दृष्टि बड़ी निरर्थक है वस्तुतः यह हमारे मोह का परिणाम है।

हिंदी कहानी का विकास अपने स्वतंत्र अस्तित्व को लेकर हुआ है। और यह मानना ज्यादा सही होगा कि हिंदी कहानी का शुभारंभ पास जाते के संपर्क के कारण और इतिहास की अनिवार्य प्रकिया के कारण हुआ है न की संस्कृत अपभ्रंश की कथा आख्यायिकाओं की उपदेश आत्मक परंपरा या अति प्रकृति तत्वों के परिणाम स्वरूप।

कहानी कहना, सुनना मनुष्य की नैसर्गिक आवश्यकता रही है तथा इसके माध्यम से उसने अपनी सामाजिकता का विकास भी किया है क्योंकि कहानी ने यदि उसका मनोरंजन किया है तो उसे जीवनोपयोगी उपदेश भी दिया है। कहानी वाचक परंपरा की देन है किंतु जब हम कहानी के आधुनिक स्वरूप को देखते हैं तो पाते हैं की कहानी घटनाओं का संयोजन मात्र ही नहीं है बल्कि मानव जीवन की जटिलताओं, विद्रूपताओं तथा उसके अंतर विरोधों को व्यक्त करने का सशक्त साहित्यिक रूप है, इसलिए आज भी यह एक लोकप्रिय विधा है।

प्राचीन काल में कहानी गद्य एवं पड़े दोनों रूपों में मिलती है महाभारत छोटी–छोटी कहानियों का भंडार है। इसी प्रकार जैन धर्म 'नंदी सूत्र' भी कहानियों का भंडार है कहानी के प्रारंभिक युग में आचार्य गुणाढय की 'वृहत्कथा' का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। संस्कृत साहित्य की कहानी परंपरा में 'कथासरितसागर' पंचतंत्र, और हितोपदेश कहानी कला के उत्कृष्ट उदाहरण है। विश्व भर के विद्वानों ने इन्हें सर्वश्रेष्ठ कथा शैली के रूप में स्वीकार किया है। इसी कारण विश्व भर की लगभग सभी भाषाओं में इनका अनुवाद हो चुका है।

सन् 1803 में मुंशी इंशा अल्लाह खान द्वारा 'रानी केतकी की कहानी' लिखी गई। सन् 1900 में आधुनिक हिंदी कहानी के मौलिक लेखन का श्री गणेश प्रयाग से प्रकाशित 'सरस्वती' पत्रिका से हुआ। इस पत्रिका में किशोरी लाल गोस्वामी की कहानी 'इंदुमती' प्रकाशित हुई जिसे हिंदी की प्रथम मौलिक कहानी का श्रेय दिया जाता है।

सन् 1909 में काशी से 'इंदु' मासिक पत्रिका का प्रकाशन हुआ जिसमें 1911 में जयशंकर प्रसाद की कहानी 'ग्राम' प्रकाशित हुई। सन् 1911 से 1927 तक कहानी का विकास कल रहा इसमें चंद्रधर शर्मा गुलेरी की कहानी 'सुखमय जीवन' विश्वंभर नाथ की 'प्रदेश' 1912 राजा राधिका रमन सिंह की कानों में कंगन 1913 मासिक पत्रिका 'इंदु' में प्रकाशित हुई। सन् 1914 में चतुरसेन शास्त्री की 'गृह लक्ष्मी' व 1915 में चंद्रधर शर्मा गुलेरी की अमर कहानी 'उसने कहा था' प्रकाशित हुई। इसी वर्ष कथा साहित्य के अमर कथाकार मुंशी प्रेमचंद की 'पंचपरमेश्वर' कहानी प्रकाशित हुई। हिंदी कहानी को जन जीवन से जोड़ने और उसके क्षेत्र को व्यापकता प्रदान करने का श्रेय प्रेमचंद को है। यथार्थ जीवन को अभिव्यक्ति का माध्यम बनाकर उन्होंने समाज की रूढ़ियों धर्म के बाह्य आडंबरों, राजनीति के खोखलेपन, उत्कट देश प्रेम आर्थिक वैषमय में कृषक वर्ग एवं श्रमिक वर्ग के शोषण के जीवन्त सशक्त चित्र खींचे। उन्होंने हिंदी में यथार्थवादी आदर्शोंनमुख कहानी लेखन का सूत्रपात किया।

कहानी विकास युग में अधिकांश का अनीकार प्रेमचंद की शिल्प कला के अनुगामी थे वृंदावन लाल वर्मा ने ऐतिहासिक' सामाजिक और शिकार संबंधी कहानियों का लेखन किया जिममे आदर्शोन्मुख यथार्थ की परवर्ती अधिक रही।

हिंदी कहानी के संक्रांति युग में कहानी व्यक्ति परक एवं भाव परक हो गई। जैनेंद्र ने नैतिक मान्यताओं के आधार पर अपने चरित्र खड़े किए। आगे और इलाचंद्र जोशी के पात्र हम और विद्रोह की भीति पर खड़े हुए।

इस युग में आकर पात्रों के मन में उठने वाला अंतर्द्वंद बाहरी घटनाओं से संबंधित नहीं रहा अब चेतन मन की आंतरिक प्रवृत्तियां ही उनके बाह्य व्यापारों का संचालन करने लगी। जैनेंद्र ने अपनी कहानियों में घटनाओं और कार्यों की अपेक्षा मानसिक ऊहा पोह विश्लेषण को प्रधानता दी। अज्ञेय ने अपने चित्रों में व्यक्तिकता को अधिक प्रश्नय दिया।

मार्क्सवादी विचारधारा की पोषक कहानियों में संघर्ष का चित्रण मिलता है। इन प्रतिवादी कहानीकारों ने धार्मिक अंधविश्वासों, परंपरागत रूढ़ियों, समाज में चलते आ रहे शोषण चक्र का तीव्रता के साथ विरोध और खंडन किया। उन्होंने व्यक्ति के रूप में न देखकर समाज के माध्यम से देखा और पूरे इतिहास का आर्थिक दृष्टि से मूल्यांकन कर प्रतिपादित किया कि उत्पादन के साधन जब तक उत्पादनकर्ता के हाथों में ना आएंगे तब तक यह संघर्ष जारी रहेगा।

निष्कर्ष

इस संघर्ष की सशक्त अभिव्यक्ति यशपाल की कहानियों में देखने को मिलती है। अन्य कहानीकारों में रागेय राघव राहुल सांकृत्यायन आदि उल्लेखनीय है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद कहानी ने नई दिशा की ओर कदम बढ़ाए। देश के सामने नए दृष्टिकोण उभरे। जीवन मूल्यों में परिवर्तन आने लगा। कहानी के शिल्प में नए प्रयोग होने लगे। सोच और चिंतन में परिवर्तन आया। इस काल में निर्मल वर्मा, भीष्म साहनी, विष्णु प्रभाकर, राजेंद्र यादव, कमलेश्वर, मोहन राकेश, मन्नू भंडारी, ज्ञान रंजन आदि कहानीकार प्रमुख रूप से उभरे । समकालीन कहानी का रचना संसार अपने आसपास के परिवेश से निर्मित है। जीवन की अनेक समस्याओं को विभिन्न रूपों में अभिव्यक्त किया है। इसी काल में मोहन राकेश, राजेंद्र यादव व कमलेश्वर ने 'नई कहानी' के आंदोलन का सूत्रपात किया। तत्पश्चात सचेतन कहानी और अकहानी जैसे अन्य आंदोलन शुरू हुए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अनिता देसाईः "फिर भी" प्रकाशन वर्षः 1999
2. एलिस मुनरोः "प्रिय जीवन" प्रकाशन वर्षः 2012
3. किरण देसाईः "टाइगर हिल" प्रकाशन वर्षः 2006
4. ईश्वरी देवीः
   1. कुली, प्रकाशन वर्षः 1936
   2. सगाई, प्रकाशन वर्षः 1947
   3. दुश्मनों की मार, प्रकाशित वर्षः1947
5. महाश्वेता देवीः
   1. रूपायन, प्रकाशित वर्षः 1986
   2. जीवन की गांठ, प्रकाशित वर्षः 1990
6. मृण्णाल गांगुलीः
   1. रुदाली, प्रकाशित वर्षः 1993
   2. भूतकाल के सपने, प्रकाशित वर्षः 2002
   3. यह समय भी गुजर जाएगा, प्रकाशित वर्षः 2001

♦❐♦